

चिकित्सीय
आपातकाल/एम्बुलेंस सेवा के लिए
कृपया 112 पर डायल करें।



अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार



रजि.न.34300 / 80

संख्या 235

श्री विजय पुरम, बुधवार , 02 सितम्बर 2026

web: dt.andamannicobar.gov.in

2.00 **रुपए**



अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय उप राज्यपाल एवं द्वीप विकास एजेंसी के उपाध्यक्ष एडमिरल डी.के. जोशी, पीवीएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, एनएम, वीएसएम (अ.प्रा.) ने आज नई दिल्ली में आयोजित जल संरक्षण एवं सुरक्षा पर विभागीय शिखर सम्मेलन में भाग लिया। यह शिखर सम्मेलन जल शक्ति मंत्रालय के जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा पुनर्जीवन विभाग द्वारा अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टिकाऊ जल प्रबंधन के लिए सहयोगात्मक कार्ययोजना तैयार करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता माननीय जल शक्ति मंत्री श्री सी. आर. पाटिल ने की।

जीबी पंत अस्पताल में दुर्लभ बॉम्बे रक्त समूह की पहचान, अनिम्स के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि

श्री विजय पुरम, १ सितंबर।

जीबी पंत अस्पताल, अनिम्स, श्री विजय पुष्प स्थित रक्त केंद्र ने नियमित रक्त समूह जांच के दौरान एक रक्तदाता में दुर्लभ बॉम्बे रक्त समूह (ओएच फेनोटाइप, आरएच(डी) पॉजिटिव) की सफलतापूर्वक पहचान की है। यह उपलब्धि रक्त आधान की सुखा सुनिश्चित करने के लिए व्यापक एवं पुष्टि-आधारित रक्त समूह जांच के महत्व को रेखांकित करती है।

रक्तदाता द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, इससे पहले श्री विजय पुरम की दो निजी प्रयोगशालाओं में रक्त समूह की जांच कराई गई थी, जहां रक्त के नमूने को ओ-पॉजिटिव बताया गया था। हालांकि, बाद में जीबी पंत अस्पताल के रक्त केंद्र में नियमित जांच के दौरान नमूने में फॉरवर्ड ग्रुपिंग में ओ-समूह जैसा पैटर्न पाया गया। रिवर्स ग्रुपिंग के दौरान असंगति देखी गई, जिसके बाद रक्त केंद्र की टीम ने आगे विस्तृत जांच करने का निर्णय लिया।

आगे की प्रतिस्काविज्ञान संबंधी जांच के अंतर्गत एंटी-एच
लेक्टिन परीक्षण भी किया गया, जिसके परिणामस्वरूप रक्तदाता
के रक्त समूह की पहचान दुर्लभ बॉम्बे फेनोटाइप (ओएच),
आरएच(डी) पॉजिटिव के रूप में हुई।

बॉम्बे रक्त समूह एक अत्यंत दुर्लभ रक्त समूह है, जिसकी कुछ आबादी में उपस्थिति लगभग 10 लाख व्यक्तियों में 1 तक बताई गई है। इस फेनोटाइप वाले व्यक्तियों में एच एंटीजन नहीं होता और नियमित फॉरवर्ड ग्रुपिंग में उनका रक्त समूह ओ जैसा दिखाई देने के बावजूद, वे सामान्य

ओ-समूह की लाल रक्त कोशिकाएं सुरक्षित रूप से प्राप्त नहीं कर सकते। उन्हें उपयुक्त रूप से संगत रक्त की आवश्यकता होती है, जिसे प्राथमिकता के आधार पर बॉम्बे फेनोटाइप वाले रक्तदाता से प्राप्त किया जाना चाहिए।

यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि दुर्लभ बॉम्बे रक्त समूह की सफल पहचान फॉरवर्ड और रिवर्स दोनों प्रकार की रक्त समूह जांच सहित व्यापक रक्त समूह परीक्षण तथा किसी भी असंगति की स्थिति में उचित पुष्टि-परीक्षण के महत्व को रेखांकित करती है। यह उपलब्धि अनिमस के जीबी पंत अस्पताल के पैथोलॉजी विभाग एवं रक्त केंद्र की तकनीकी विशेषज्ञता और नैदानिक क्षमताओं को दर्शाती है तथा रक्त आधान चिकित्सा के उच्च मानकों को बनाए रखने और सुरक्षित एवं संगत रक्त आधान सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए प्रतिक्रिया को प्रदर्शित करती है।

अनिम्स के निदेशक ने इस दुर्लभ रक्त समूह की सफलतापूर्वक पहचान करने के लिए अनिम्स के पैथोलॉजी विभाग और जीबी पंत अस्पताल के रक्त केंद्र के प्रयासों की सरहना की तथा सावधानीपूर्वक प्रयोगशाला मूल्यांकन और मानक रक्त आधान प्रक्रियाओं के पालन के लिए टीम की प्रशंसा की। निदेशक ने कहा कि इस प्रकार की उपलब्धियाँ अनिम्स की नैदानिक एवं रक्त आधान सेवाओं को और मजबूत करती हैं एवं एडम्बान तथा निकोबार द्वीपसमूह के लोगों के लिए सुरक्षित एवं योगवतापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ सिन्धित करने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

नॉर्थ बे में केज कल्चर को बढ़ावा देने की दिशा में
आईसीएआर—सीआईएआरआई और
आइलैंड फिशरीज एंड मरीन सर्विसेज
स्वयं सहायता समूह के साथ समझौता

श्री विजय पुरम, १ सितंबर।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएआरआई), श्री विजयपुरम, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह ने दक्षिण अण्डमान के नॉर्थ बे में समुद्री मछली केज कल्चर के प्रदर्शन, प्रचार-प्रसार और तकनीकी सहायता के लिए 31 अगस्त, 2026 को आइलैंड फिशरीज एंड मरीन सर्विसेज स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।

इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य वैज्ञानिक समुद्री कृषि पद्धतियों को क्षेत्रीय स्तर पर अपनाने की सुविधा प्रदान करना तथा केज आधारित मछली पालन की क्षमता को स्थानीय मछुआरों और स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के लिए एक व्यवहार्य और टिकाऊ आजीविका विकल्प के रूप में प्रदर्शित करना है।

आईसीएआर—सीआईएआरआई के निदेशक डॉ. जय सुंदर ने समझौता ज्ञापन के अंतर्गत प्रस्तावित सहयोग के क्षेत्रों पर चर्चा की और स्वयं सहायता समूह को दीर्घकालिक स्तर, सेवाओं एवं लाभों तक पहुंच तथा पहल की संघर्षात्मक स्थिरता को बढ़ाने के लिए सहकारी समिति के रूप में आगे बढ़ने पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया।



आईसीएआर—सीआईएआरआई के मत्स्य विज्ञान प्रभाग के प्रमुख डॉ. एम. मुरुगानंदम ने बताया कि यह सहयोग वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञता को क्षेत्रीय स्तर के हितधारकों के अनुभव एवं उद्यमशीलता के साथ जोड़ने में सहायता करेगा।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. किरुबाशंकर ने केज पालन के लिए उपयुक्त संभावित क्षेत्रों तथा सुरक्षित और प्रभावी केज कल्चर के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण सावधानियों एवं स्थल-विशिष्ट पहलुओं के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. प्रवीणराज, वैज्ञानिक श्री चित्तरंजन राउल और डॉ. जेस मारिया विल्सन ने मछली स्वास्थ्य

शेष पृष्ठ 4 पर

एचआईवी एवं एड्स के प्रति जागरूकता
बढ़ाने के लिए 5 किलोमीटर रेड रन
मैराथन 11 सितंबर को

श्री विजय पुरम, १ सितंबर।

अण्डमान तथा निकोबार एड्स नियंत्रण सोसाइटी (एएनएसीएस) द्वारा आम जनता के बीच एचआईवी एवं एड्स के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 11 सितंबर, 2026 (शुक्रवार) को 5 किलोमीटर की रेड रन मैराथन का आयोजन किया जा रहा है। रेड रन में 17 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्ति भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता पुरुष एवं महिला वर्ग में आयोजित की जाएगी।

मैराथन का शुभारंभ एवं समापन अण्डमान क्लब, श्री विजय पुरम में होगा। मैराथन का मार्ग गर्ल्स स्कूल, फ्लैग प्वाइंट, मज़ार होते हुए उसी मार्ग से वापस अण्डमान क्लब तक रहेगा जहाँ इसका समापन होगा।

प्रत्येक वर्ग में आकर्षक नकद पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को 10,000 रुपये, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले को 8,000 रुपये तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा।

रेड रन के लिए ऑनलाइन पंजीकरण 1 सितंबर से 9 सितंबर, 2026 तक खुला रहेगा। इच्छुक प्रतिभागी लिंक https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdpt5z2_9iG1AwKCnM5Xc06YUeH7SywX0J4lCSCkD5g0cLhNg/viewform?usp=sharing&oid=107277355639124119055 के माध्यम से ऑनलाइन पंजीकरण कर सकते हैं। ऑनलाइन पंजीकरण फॉर्म **शेष पृष्ठ 4 पर**

शेष पृष्ठ 4 पर



दक्षिण अण्डमान के विभागीय वन कार्यालय
में पॉश अधिनियम के प्रति जागरूकता एवं
क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित



श्री विजय पुरम, 1 सितंबर।

दक्षिण अण्डमान वन प्रभाग द्वारा 1 सितंबर, 2026 को विभागीय वन कार्यालय (दक्षिण अण्डमान), विमलीगंज में पॉश (कार्थस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम) अधिनियम के प्रति जागरूकता एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस सत्र का संचालन द्वीप-आधारित गैर-सरकारी संगठन राइट्स फॉर ऑल (आरएफओ) की अध्यक्ष एवं प्रमाणित पॉश मास्टर ट्रेनर श्रीमती रुबीना सिद्दीकी ने किया। कार्यक्रम में दक्षिण अण्डमान के प्रभागीय वन अधीक्षक श्री राजी शर्मा जॉर्ज, आईएफएस, सहायक वन संरक्षक श्री आर.एस. शर्मा तथा सुश्री एस. सफिया, एडीओ/अध्यक्ष, आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी), डीएफओ दक्षिण अण्डमान की उपस्थिति रही। कार्यालय के लगभग 55 कर्मचारियों, जिनमें पुरुष एवं महिला कर्मचारी शामिल थे, ने कार्यक्रम में भाग लिया और संवादात्मक सत्र एवं चर्चाओं में



सक्रिय रूप से सहभागिता की।

कार्यक्रम में पंश अधिनियम, 2013 के प्रावधानों, कार्यस्थल की सुरक्षा, पेशेवर आवरण, कर्मचारियों के अधिकार तथा शिकायतों की रिपोर्टिंग और उनके समाधान की प्रक्रिया पर विशेष रूप से चर्चा की गई। प्रतिभागियों को आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) की भूमिका एवं कार्यप्रणाली के बारे में भी जानकारी दी गई। इसके साथ ही कार्यस्थल से संबंधित विभिन्न परिस्थितियों को व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से समझाया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागी कर्मचारियों को पंश प्रतिज्ञा भी दिलाई गई।

यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि कार्यक्रम का आयोजन सभी कर्मचारियों के लिए एक सुरक्षित, सम्मानजनक एवं सहयोगात्मक कार्यस्थल का वातावरण तैयार करने तथा पॉश अधिनियम, 2013 के प्रावधानों के प्रति जागरूकता एवं अनपालन को मजबूत करने के उद्देश्य से किया गया था।

अवैध रूप से चीरी गई इमारती लकड़ी ज़ब्त



श्री विजय पुरम, 1 सितंबर। नियमित गश्त और निरंतर वन सुरक्षा कर्तव्यों के तहत दक्षिण अण्डमान वन प्रभाग अवैध कटाई को रोकने के लिए कड़ी निगरानी बनाए हुए है। मंगलूटान और जिरकाटांग रेंज द्वारा 1 सितम्बर, 2026 को की गई नियमित गश्त के दौरान दो अलग-अलग स्थानों से अवैध रूप से आरी से काटी गई इमारती लकड़ी का पता लगाकर उसे ज़ब्त किया गया। मंगलूटान रेंज में हेड फॉरेस्ट गार्ड श्री झंतु दास, फॉरेस्ट गार्ड श्री साजन गोप और विभागीय कर्मचारियों की एक टीम ने रटलैंड के अमदेरा क्षेत्र में नियमित गश्त की। गश्त के दौरान टीम ने 37 नग पड़ाक की आरी से काटी गई इमारती लकड़ी का पता लगाया और उसे ज़ब्त किया, जिसका माप लगभग 0.974 घन मीटर था। निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार लकड़ी को ज़ब्त कर सुरक्षित अभिरक्षा के लिए रटलैंड के अनारकली बीट के बीट अधिकारी को सौंप दिया गया तथा भारतीय वन अधिनियम, 1927 की संबंधित धाराओं के तहत अज्ञात के विरुद्ध मामला दर्ज किया गया। इसी प्रकार, जिरकाटांग रेंज में फॉरेस्टर श्री के. कल्याण कुमार के नेतृत्व में विभागीय कर्मचारियों की एक टीम ने माइल तिलक बीट आरक्षित वन क्षेत्र में नियमित गश्त के दौरान अवैध रूप से हाथ से आरी से काटी गई

सागौन की लकड़ी के 05 नग, जिनका माप लगभग 0.087 घन मीटर था, का पता लगाया। गश्ती अभियान पूरा होने के बाद टीम ने ज़ब्त की गई अवैध रूप से हाथ से आरी से काटी गई लकड़ी को सुरक्षित अभिरक्षा के लिए सीओ (मुख्यालय), माइल तिलक को सौंप दिया तथा भारतीय वन अधिनियम, 1927 की संबंधित धाराओं के तहत अज्ञात के विरुद्ध मामला दर्ज किया गया। यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि उक्त कार्रवाई दक्षिण अण्डमान वन प्रभाग के प्रभागीय वन अधिकारी श्री राजी जॉर्ज, आईएफएस, के समग्र पर्यवेक्षण तथा सहायक वन संरक्षक श्री आर.एस. शर्त और संबंधित रेंज अधिकारियों अर्थात श्री अमलेंदु मंडल, फॉरेस्ट रेंजर, रेंज अधिकारी (मंगलूटान) तथा श्री एथोनी तिर्की, फॉरेस्ट रेंजर, रेंज अडिाकारी (जिरकाटांग) के मार्गदर्शन में की गई। दक्षिण अण्डमान वन प्रभाग ने आम जनता से एक बार फिर अपील की है कि वे द्वीपों के वनों और वन्यजीवों की सुरक्षा में सहयोग करें तथा अवैध शिकार, वन एवं वन्यजीव उत्पादों के अवैध कब्जे, परिवहन, भंडारण या व्यापार से संबंधित किसी भी जानकारी की सूचना हेल्पलाइन नंबर 03192-255228 पर दें। सूचना देने वालों की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी।

40 किसानों को दिया गया मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण

श्री विजय पुरम, 1 सितंबर। यूटी-एटीएमए के तहत प्रोथरापुर और फरारगंज खंडों के लिए 'मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देना, मधुमक्खी कॉलोनियों का स्थानांतरण, मधुमक्खी पेटी प्रबंधन, शहद निष्कर्षण एवं विपणन' विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 31 अगस्त और 1 सितंबर, 2026 को सीड मल्टीप्लीकेशन फार्म, ब्लूम्सडेल, छोलदारी में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में गुप्तापाड़ा ग्राम पंचायत के प्रधान श्री दुर्लम दास मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर दक्षिण अण्डमान की सहायक निदेशक (कृषि) डॉ. एस.सी. रेखा, फरारगंज खंड की खंड किसान सलाहकार समिति (बीएफएसी) के अध्यक्ष श्री बलराम सिंह तथा प्रोथरापुर और फरारगंज खंडों के कृषि अधिकारी एवं एटीएमए के कर्मचारी भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर दक्षिण अण्डमान की सहायक निदेशक (कृषि) ने किसानों के लिए अतिरिक्त आय अर्जित करने वाली गतिविधि के रूप में मधुमक्खी पालन के महत्व एवं इसकी संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने परागण में मधुमक्खियों की महत्वपूर्ण भूमिका तथा फसल उत्पादकता, गुणवत्ता और कृषि आय में सुधार में उनके योगदान पर भी जोर दिया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य किसान मित्रों की वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन पद्धतियों में क्षमता का निर्माण करना था, ताकि वे आगे चलकर संसाधन व्यक्तियों के रूप में कार्य कर सकें तथा प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त ज्ञान एवं तकनीकों को अपने-अपने गांवों के किसानों तक पहुंचा सकें। यहां प्राप्त



प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि मधुमक्खी पालन के अलावा प्रतिभागियों को कस्टम हायरिंग केंद्रों के माध्यम से कृषि मशीनरी की उपलब्धता एवं कार्यप्रणाली के बारे में भी जागरूक किया गया। उन्हें कृषि कार्यों के लिए कृषि मशीनरी किराये पर लेने की प्रक्रिया की जानकारी दी गई। कृषि अपशिष्ट श्रेडर का व्यावहारिक प्रदर्शन भी किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को इसके संचालन तथा कृषि अपशिष्ट के प्रभावी प्रबंधन एवं पुनर्वर्द्धन में इसकी उपयोगिता से परिचित कराया गया। दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफलतापूर्वक पूरा होने पर प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रोथरापुर और फरारगंज खंडों के किसान मित्रों सहित कुल 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

एचआईवी एवं एड्स के प्रति जागरूकता बढ़ाने

—पृष्ठ 1 का शेष

या दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करके पंजीकरण कर सकते हैं।

यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि जो प्रतिभागी ऑनलाइन पंजीकरण नहीं कर पाएंगे, उनके लिए कार्यक्रम स्थल पर मौके पर पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध रहेगी। सभी प्रतिभागियों को मैराथन के लिए 11 सितंबर, 2026 (शुक्रवार) को सुबह 5.30 बजे नेताजी स्टेडियम, श्री विजय पुरम में रिपोर्ट करना अनिवार्य है।

अधिक जानकारी के लिए श्री कौशिक कुमार हलदर, एडी आईईसी, मोबाइल नंबर 9474281620 तथा श्री संतोष बघेल, एडी डॉक्यूमेंटेशन, मोबाइल नंबर 9474220069 से संपर्क किया जा सकता है।



आईसीएआर-सीआईएआरआई और आइलैंड

—पृष्ठ 1 का शेष

निगरानी, रोग निगरानी तथा केज आधारित प्रणालियों के माध्यम से समुद्री मछली पालन के विकास के क्षेत्र में आईसीएआर-सीआईएआरआई द्वारा जारी पहलों पर प्रकाश डाला। सहयोग के तहत ये तकनीकी सेवाएं स्वयं सहायता समूह को प्रदान की जाएंगी।

आईसीएआर-सीआईएआरआई की टीम ने बताया कि वह तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करेगी और मत्स्य विज्ञान प्रभाग के माध्यम से समुद्री कृषि पर अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना (एआईएनपी) के अंतर्गत निर्मित एवं उपलब्ध कराए गए एचडीपीई गोलाकार समुद्री केज में एशियाई सीबास (लेट्स कैल्केरिफर) के पालन का प्रदर्शन करेगी।

इस सहयोग से अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के स्थानीय मछुआरों एवं स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के बीच प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, क्षमता निर्माण, उद्यमशीलता तथा उन्नत प्रौद्योगिकियों को क्षेत्रीय स्तर पर अपनाने को मजबूती मिलने की उम्मीद है, जिससे वैज्ञानिक, टिकाऊ और आर्थिक रूप से व्यवहार्य समुद्री कृषि पद्धतियों को बढ़ावा मिलेगा। यह द्वीपों की परिस्थितियों में समुद्री मछली केज कल्चर के प्रदर्शन, अर्थव्यवस्था और स्थिरता से संबंधित क्षेत्र-आधारित आंकड़े एवं ज्ञान उत्पन्न करने के लिए एक मंच भी प्रदान करेगा।

यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि समझौता ज्ञापन पर आईसीएआर-सीआईएआरआई की ओर से डॉ. जय सुंदर तथा आइलैंड फिशरीज एंड मरीन सर्विसेज स्वयं

मायाबंदर क्षेत्र सहित 42 किसानों के लिए प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण शुरू



श्री विजय पुरम, 1 सितंबर। उत्तर व मध्य अण्डमान जिलों के किसानों के लिए प्राकृतिक खेती पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज आईसीएआर-कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), श्री विजय पुरम के प्रशिक्षण हॉल में शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के कृषि विभाग द्वारा आईसीएआर-कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (एटीएमए) तथा राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन (एनएमएनएफ) के सहयोग से किया जा रहा है। यह कार्यक्रम कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (एटीएमए) के साथ समन्वय में एनएमएनएफ के तहत आयोजित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य किसानों को ऐसी प्राकृतिक खेती पद्धतियों को अपनाने के लिए व्यावहारिक ज्ञान, तकनीकी कौशल एवं प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना है, जो कम लागत वाली, टिकाऊ तथा स्थानीय कृषि परिस्थितियों के अनुकूल हों। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि कृषि निदेशक श्री देबब्रत बसंतिया तथा विशिष्ट अतिथि आईसीएआर-सीआईएआरआई के निदेशक डॉ. जय सुंदर की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर डॉ. वाई. रामकृष्ण, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, आईसीएआर-कृषि विज्ञान केंद्र तथा नोडल अधिकारी, एनएमएनएफ, आईसीएआर-कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक एवं विषय विशेषज्ञ, कृषि विभाग के अधिकारी, एटीएमए के पदाधिकारी तथा प्रशिक्षण में भाग लेने वाले किसान भी उपस्थित रहे।

किसानों को संबोधित करते हुए कृषि निदेशक ने करेन धान के महत्व पर प्रकाश डाला, जिसे हाल ही में भौगोलिक संकेतक (जीआई) मान्यता प्राप्त हुई है और जिसे द्वीप सुगंध पहल के अंतर्गत भी शामिल किया गया है। उन्होंने किसानों को बेहतर उत्पादन प्राप्त करने के साथ-साथ मुदा स्वास्थ्य एवं दीर्घकालिक स्थिरता बनाए रखने के लिए धान की खेती में उचित फसल प्रबंधन तकनीकों के साथ प्राकृतिक खेती पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

आईसीएआर-सीआईएआरआई के निदेशक डॉ. जय सुंदर ने कहा कि प्राकृतिक खेती पद्धतियों को अपनाने से स्वस्थ किसान, स्वस्थ मिट्टी और स्वस्थ पर्यावरण को बढ़ावा देने में योगदान मिल सकता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले दिन 'करके सीखने' की पद्धति पर विशेष ध्यान दिया गया। इसके तहत पंचगव्य, नीमास्त्र, जीवामृत और बीजामृत जैसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक खेती जैव-आदान तैयार करने एवं उनके उपयोग से संबंधित प्रदर्शन और व्यावहारिक सत्र आयोजित किए गए। किसानों को फसल उत्पादन में इन जैव-आदान के महत्व, इन्हें तैयार करने की विधियों तथा इनके प्रयोग के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि कार्यक्रम में कुल 42 किसान भाग ले रहे हैं। प्रतिभागियों में मुख्य रूप से मायाबंदर क्षेत्र के किसान तथा प्राकृतिक खेती क्लस्टरों के अंतर्गत आने वाले अन्य क्षेत्रों के किसान शामिल हैं।

जेएनआरएम में एनएसएस अभिमुखीकरण-सह-नामांकन कार्यक्रम हुआ

श्री विजय पुरम, 1 सितंबर। जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय, श्री विजय पुरम की एनएसएस इकाई द्वारा 1 सितंबर, 2026 को सुबह 11 बजे व्याख्यान दीर्घा में प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए अभिमुखीकरण-सह-नामांकन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य नव प्रवेशित विद्यार्थियों को राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के उद्देश्यों, मूल्यों, गतिविधियों एवं जिम्मेदारियों से परिचित कराना था। जेएनआरएम की प्राचार्या डॉ. पर्ल देवदास ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सामुदायिक सहभागिता के महत्व तथा विद्यार्थियों में सामाजिक जिम्मेदारी और सेवा भावना विकसित करने में एनएसएस की भूमिका पर जोर दिया। एनएसएस समन्वयक श्रीमती निधि शेखावत ने कार्यक्रम अधिकारियों एवं स्वयंसेवकों के प्रयासों की सराहना की तथा विद्यार्थियों को एनएसएस की योजनाओं और वार्षिक गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। वनस्पति विज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर एवं एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी, इकाई-2, श्री सुदेश कुमार ने एनएसएस स्वयंसेवकों की भूमिकाओं एवं जिम्मेदारियों पर प्रस्तुति दी। एनएसएस



स्वयंसेवक मुबाशिरा, तुषार सरकार और जमुना नायक ने क्रमशः 'स्वच्छ भारत, नशीली दवाओं का दुरुपयोग एवं आपदा प्रबंधन तथा महिला एवं बाल विकास विषयों पर प्रस्तुतियां दीं। एनएसएस स्वयंसेवक लिखिता ने अपने अनुभव साझा किए और विद्यार्थियों को एनएसएस में नामांकन के लिए प्रोत्साहित किया। यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि कार्यक्रम का समापन एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी, इकाई-3, श्री नितिन कुमार सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिन्होंने कार्यक्रम का समन्वय भी किया। कार्यक्रम का संचालन जमुना नायक और मुकेश पाइक ने किया। इस अवसर पर प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

दक्षिण अण्डमान ज़िला पुलिस ने खेल प्रतियोगिताएं आयोजित कीं

श्री विजय पुरम, 1 सितंबर। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर तथा नशामुक्त भारत अभियान के तहत दक्षिण अण्डमान पुलिस ने जिले भर में युवाओं के बीच स्वस्थ, फिट और नशामुक्त जीवनशैली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न खेल एवं जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया।

इस पहल के तहत चाथम, हम्फ्रीगंज, ओग्राब्राज, बम्बूफ्लाट, हटबे और अबर्डीन पुलिस थानों द्वारा पुलिस कर्मियों, स्थानीय युवाओं और सामुदायिक टीमों की भागीदारी से मैत्रीपूर्ण वॉलीबॉल एवं फुटबॉल मैच आयोजित किए गए। चाथम में लिल्लीपुर विजेता रहा, जबकि हम्फ्रीगंज में मंगलूटान ने जीत हासिल की। वहीं, अबर्डीन पुलिस थाने द्वारा कार्बाईस कोव तट पर आयोजित वॉलीबॉल टूर्नामेंट में पहाड़गांव पुलिस थाना विजेता रहा और अबर्डीन पुलिस थाना उपविजेता रहा। टुसनाबाद, विम्बलीगंज और हरबिंदर बे, लिटिल अण्डमान में भी मैच आयोजित किए गए। इन आयोजनों से युवाओं को खेलकूद एवं रचनात्मक गतिविधियों में शामिल होने का अवसर मिला तथा पुलिस और जनता के बीच संबंधों को मजबूत करने में भी सहायता मिली।

इन खेल गतिविधियों के साथ जागरूकता सत्र भी आयोजित किए गए, जिनमें नशीली दवाओं के दुरुपयोग से होने वाले शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक दुष्प्रभावों तथा युवाओं को नशे और अन्य हानिकारक गतिविधियों से दूर रखने में खेल, शिक्षा एवं सकारात्मक गतिविधियों के महत्व पर प्रकाश डाला गया। दक्षिण अण्डमान के पुलिस अधीक्षक की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि इस प्रकार की पहलों के माध्यम से दक्षिण अण्डमान पुलिस ने सक्रिय सामुदायिक पुलिसिंग, युवा सहभागिता और नशामुक्त भारत के लक्ष्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है। साथ ही युवाओं को सुरक्षित एवं स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए अनुशासन, टीम भावना, शारीरिक फिटनेस और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

नागरिकों से अपील की गई है कि वे मादक पदार्थों से



संबंधित किसी भी जानकारी की सूचना मानस हेल्पलाइन 1933, पुलिस आपातकालीन हेल्पलाइन 112 अथवा व्हाट्सएप नंबर 9531856080 पर दें। सूचना देने वालों की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी। आइए, जागरूकता, खेल, सतर्कता और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से मिलकर एक स्वस्थ, सुरक्षित और नशामुक्त दक्षिण अण्डमान का निर्माण करें।

एमजीजीसी में वॉक-इन साक्षात्कार पुनर्निर्धारित

मायाबंदर, 1 सितंबर।

महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर ने सभी संबंधित अभ्यर्थियों को सूचित किया है कि इतिहास, कंप्यूटर विज्ञान तथा हर्बल पोषण/खाद्य विज्ञान विषयों में संसाधन व्यक्तियों की नियुक्ति के लिए पूर्व में 4 सितम्बर, 2026 (शुक्रवार) को निर्धारित वॉक-इन साक्षात्कार अब 5 सितम्बर, 2026 (शनिवार) को पुनर्निर्धारित किया गया है।

साक्षात्कार सुबह 10 बजे महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर के प्राचार्य कक्ष में आयोजित किया जाएगा। यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि मूल अधिसूचना में उल्लिखित अन्य सभी नियम एवं शर्तें यथावत रहेंगी। अभ्यर्थियों को संशोधित तिथि का ध्यान रखने तथा उसी के अनुसार साक्षात्कार में उपस्थित होने की सलाह दी गई है।

विश्व नारियल दिवस: नारियल का कोई हिस्सा बेकार नहीं, लकड़ी से लेकर कोकोपीट तक, जानें हर हिस्से का उपयोग

नई दिल्ली, 1 सितंबर (आईएनएस)। नारियल कई सारे न्यूट्रिशन से भरा हुआ सेहत के लिए बहुत ही फायदेमंद फल है। नारियल के इसी गुण और महत्व को बताने के लिए भारत सहित एशिया—प्रशांत क्षेत्र के कई देशों में हर साल 2 सितंबर को विश्व नारियल दिवस मनाया जाता है। विश्व नारियल दिवस दुनिया के सबसे उपयोगी प्राकृतिक उत्पादों में शामिल नारियल के आर्थिक, कृषि और सामाजिक महत्व को बताता है। विश्व नारियल दिवस 2026 की थीम “अनिश्चितता के समय में नारियल: भोजन, ऊर्जा और आजीविका की सुरक्षा” है। यह थीम बताती है कि बदलते वैश्विक हालात में नारियल खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा और रोजगार के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है।

वहीं, देखा जाए तो नारियल केवल एक फल नहीं बल्कि लाखों किसानों और ग्रामीण परिवारों की आजीविका का आधार है। नारियल के पेड़ का लगभग हर हिस्सा किसी न किसी काम आता है। नारियल पानी का इस्तेमाल ताजगी देने वाले पेय के रूप में होता है जबकि नारियल के गूदे से दूध और तेल तैयार किया जाता है। नारियल तेल खाना पकाने के साथ—साथ साबुन, क्रीम, सौंदर्य प्रसाधन और बालों की देखभाल से जुड़े उत्पादों में भी इस्तेमाल होता है।

विश्व नारियल दिवस पहली बार वर्ष 2009 में मनाया गया था। यह दिवस एशियाई और प्रशांत नारियल समुदाय से जुड़ा है, जिसे अब अंतर्राष्ट्रीय नारियल समुदाय के नाम से जाना जाता है। 2 सितंबर की तारीख इसलिए चुनी गई क्योंकि इसी दिन इस संगठन की स्थापना हुई थी। इस दिवस का उद्देश्य नारियल के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के साथ—साथ नारियल क्षेत्र में निवेश, अनुसंधान, नवाचार और उद्योग के विकास को प्रोत्साहित करना है। दुनिया के लगभग 80 देशों में नारियल की खेती की जाती है और इसकी करीब 150 किस्में बताई जाती हैं। मलेशियन गेलो ड्वार्फ, फिजी ड्वार्फ, किंग कोकोनट, वेस्ट कोस्ट टॉल, ईस्ट कोस्ट टॉल, पनामा टॉल, ड्वार्फ ऑरेंज और ग्रीन ड्वार्फ जैसी किस्में अलग—अलग क्षेत्रों में उगाई जाती हैं। भारत, इंडोनेशिया, फिलीपींस सहित कई एशियाई—प्रशांत देश नारियल उत्पादन और इससे जुड़ी आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

नारियल की खासियत यह है कि इसके किसी भी हिस्से को आसानी से बेकार नहीं माना जाता। इसका तना और लकड़ी घरों, फर्नीचर और नावों के निर्माण में इस्तेमाल होती है। नारियल के छिलके और रेशे यानी कोयर से रस्सियां, जाल, चटाइयां, ब्रश और दरवाजे के पायदान बनाए जाते हैं। नारियल के छिलके से तैयार बोर्ड का इस्तेमाल फर्नीचर और कुछ औद्योगिक उत्पादों में भी किया जाता है।

927 गोलों पर रुका लियोनेल मेस्सी का करियर, नहीं तोड़ पाए रोनाल्डो का यह रिकॉर्ड

नई दिल्ली, 01 सितम्बर।

फुटबॉल के ‘बेताज बादशाह’ लियोनेल मेसी ने अपने करियर में 1,171 मैचों में 927 गोल करने के बाद अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल को अलविदा कहा है। मेसी ने अपने आखिरी मैच में चार गोल करके इंटर मियामी को शनिवार को मेहमान टीम सीएफ मॉन्ट्रियल पर रिकॉर्ड 7–1 से जीत दिलाई। मियामी के लिए मेसी के चार गोल के शानदार प्रदर्शन से उनके करियर के गोल की संख्या 1,171 मैचों में 927 हो गई है।

लगभग दो दशकों से, पुर्तगाल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो और लियोनेल मेसी फुटबॉल की सबसे बड़ी व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विताओं में से एक में शामिल रहे हैं। उन्होंने बैलन डी’ओर, चैंपियंस लीग रिकॉर्ड, लीग खिताब और गोल करने के मील के पत्थर के लिए प्रतिस्पर्धा की है, और लगातार एक—दूसरे को असधारण स्तर तक आगे बढ़ाया है। लेकिन संन्यास के बाद लियोनेल मेसी 1,000 करियर गोल की दौड़ में क्रिस्टियानो रोनाल्डो से पीछे रह गए हैं शनिवार को मॉन्ट्रियल के खिलाफ इंटर मियामी की 7–1 से शानदार जीत में मेसी के चार गोल के प्रदर्शन ने उन्हें 1,171 मैचों में 927 करियर गोल तक पहुंचा दिया। इस बीच, रोनाल्डो 1000 गोल के मील के पत्थर के बहुत करीब हैं। पुर्तगाली सुपरस्टार ने 1,333 मैचों में 978 गोल किए हैं, जिससे वे 1,000 गोल से सिर्फ 22 गोल दूर हैं।

युद्ध के मैदान से निकला था झारखंड का ‘छऊ नृत्य’, बिना शब्दों के रामायण—महाभारत की कथाएं सुनाता है ये लोक नृत्य

नई दिल्ली, 01 सितम्बर।

झारखंड की संस्कृति की बात करें तो छऊ नृत्य का नाम लेना जरूरी है। ये इस राज्य का लोक नृत्य है। इस नृत्य की सबसे बड़ी खासियत है कि इसमें मार्शल आर्ट्स और नाटक का मेल भी देखने को मिलता है। इस डांस में नृतक बिना कुछ बोले पूरी कहानी सुनाते हैं, जो दर्शकों के दिल को छू जाती है।

माना जाता है कि छऊ नृत्य की शुरुआत सरायकेला के रजवाड़ों और स्थानीय जनजातीय समुदायों से सैन्य अभ्यास से जुड़ी है। सैनिक अपने युद्ध कौशल को बनाए रखने के लिए ढोल—नगाड़ों की थाप पर युद्ध अभ्यास किया करते थे और यही से छऊ नृत्य शुरू हुआ।

नगाड़ों की थाप पर युद्ध अभ्यास ने धीरे—धीरे नाटक और नृत्य का रूप ले लिया। 18वीं और 19वीं सदी में सरायकेला के राजाओं ने इस नृत्य को संरक्षण दिया और समय के साथ इस नृत्य की कई शैलियां ने भी रूप लिया।

छऊ नृत्य को उसका नाम कैसे मिला, इससे जुड़ी कोई ठोस जानकारी नहीं मिलती है, लेकिन इससे जुड़ी कुछ मान्यताएं हैं। एक मान्यता है कि इसका नाम सैनिकों की छावनी से बना है। युद्ध अभ्यास से विकसित होने की वजह से इसे यह नाम मिला। दूसरी मान्यता है कि छऊ का मतलब छवि है, जो इस डांस को मुखौटा पहनकर करने की वजह से मिला है।

छऊ नृत्य में मार्शल आर्ट और युद्ध कलाओं का मेल देखने को मिलता है। इसमें तलवारबाजी, ढाल चलाने के पैंतरे और हवा में ऊंची छलांग लगाने जैसे स्टेप्स शामिल होते हैं। झारखंड का छऊ नृत्य अपनी कलात्मकता के लिए जाना जाता है। इसमें कलाकार अपने चेहरे पर मिट्टी और पेपर मैश के मुखौटे पहनते हैं और शरीर की मुद्राओं से



नारियल का भूसा यानी कोकोपीट आधुनिक कृषि में भी उपयोगी है। इसे हाइड्रोपोनिक खेती और पौधों को उगाने के लिए माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। ऑर्किड और मशरूम जैसी फसलों के उत्पादन में भी इसका उपयोग किया जाता है। वहीं, नारियल के खोल से तैयार सक्रिय कार्बन पानी साफ करने वाले फिल्टर में काम आता है।

नारियल में फाइबर के साथ विटामिन सी, ई और बी समूह के कुछ विटामिन तथा आयरन, मैग्नीशियम, कैल्शियम और जिंक जैसे खनिज पाए जाते हैं। नारियल पानी लोकप्रिय पेय है जबकि नारियल का गूदा और दूध कई पारंपरिक व्यंजनों, मिठाइयों और खाद्य पदार्थों का हिस्सा हैं। हालांकि नारियल से जुड़े स्वास्थ्य लाभों को व्यक्ति की जरूरत और कुल आहार के संदर्भ में देखना चाहिए।

नारियल को लेकर कई रोचक तथ्य भी प्रचलित हैं। ‘कोकोनट’ शब्द को पुर्तगाली शब्द ‘कोको’ से जोड़ा जाता है, जिसका अर्थ चेहरा है। माना जाता है कि नारियल के तीन छेद चेहरे जैसी आकृति बनाते हैं। नारियल का पेड़ कई दशकों तक फल दे सकता है और अनुकूल परिस्थितियों में एक पेड़ से सालाना बड़ी संख्या में नारियल प्राप्त किए जा सकते हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नारियल पानी को आपात परिस्थितियों में शरीर में तरल की कमी पूरी करने के लिए सलाइन के विकल्प के रूप में इस्तेमाल किए जाने की घटनाएं भी दर्ज हैं। हालांकि आधुनिक चिकित्सा में यह नियमित अंतःशिरा उपचार का विकल्प नहीं है। वैज्ञानिक रूप से नारियल को वनस्पति विज्ञान में एक प्रकार का फाइब्रोस ड्रूप माना जाता है, इसलिए इसे सामान्य अर्थों में केवल ‘सूखा मेवा’ कहना सही नहीं है।

नारियल की खेती ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इससे किसानों को फल, पानी, तेल, कोयर, कोकोपीट और अन्य उत्पादों के माध्यम से आय के अलग—अलग स्रोत मिलते हैं। नारियल आधारित उद्योग रोजगार पैदा करते हैं और प्रसंस्कृत उत्पादों के निर्यात से व्यापार को बढ़ावा मिलता है।—आईएनएस

927 गोलों पर रुका लियोनेल मेस्सी का करियर, नहीं तोड़ पाए रोनाल्डो का यह रिकॉर्ड

नई दिल्ली, 01 सितम्बर।



हालांकि, रोनाल्डो ने बार—बार साबित किया है कि उम्र उनके लिए कोई रुकावट नहीं है। 41 साल की उम्र में भी वे लगातार गोल कर रहे हैं। उन्होंने अपनी बेहतरीन फिटनेस और टॉप पर बने रहने की बेमिसाल चाहत के दम पर अपना करियर बनाया है। पुर्तगाली खिलाड़ी ने मेसी के मुकाबले करियर में 51 गोल ज़्यादा किए हैं।

लियोनेल मेसी ने अपने करियर में 207 इंटरनेशनल मैचों में 125 गोल किए हैं, जिससे वे अर्जेंटीना के लिए अब तक के सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। इंटरनेशनल फुटबॉल में सबसे ज्यादा गोल करने वालों की लिस्ट में भी मेसी दूसरे नंबर पर हैं, उनसे आगे सिर्फ उनके प्रतिद्वंद्वी क्रिस्टियानो रोनाल्डो हैं।

युवा शक्ति, स्वदेशी तकनीक और नवाचार से बनेगा विकसित भारत—रक्षा राज्य मंत्री

नई दिल्ली, 01 सितम्बर (हि.स.)।

रक्षा राज्यमंत्री श्री संजय सेठ ने मंगलवार को कहा कि भारत की युवा शक्ति, स्वदेशी तकनीक, रक्षा क्षमता और नवाचार देश को आत्मनिर्भर एवं विकसित राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि बदलते वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य में युद्ध अब केवल पारंपरिक सैन्य क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि अंतरिक्ष, साइबर, इलेक्ट्रॉनिक और सूचना क्षेत्र भी निर्णायक बन चुके हैं। ऐसे में तीनों सेनाओं के बीच संयुक्तता और एकीकरण के साथ पूरे राष्ट्र की क्षमताओं के समन्वित उपयोग की आवश्यकता है।

श्री संजय सेठ एकीकृत रक्षा स्टाफ मुख्यालय के अंतर्गत संयुक्त युद्ध अध्ययन केंद्र की ओर से यहां मानेकशॉ सेंटर में आयोजित ‘रक्षा बलों के दृष्टिकोण से राष्ट्रीय पुनरुत्थान’ विषयक दूसरे वार्षिक ट्राइडेंट व्याख्यान में यह बात कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ के प्रमुख एवं संयुक्त युद्ध अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष एयर मार्शल तेजिंदर सिंह ने की। संयुक्त युद्ध अध्ययन केंद्र के महानिदेशक मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) अशोक कुमार ने उद्घाटन सत्र का संचालन किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ सैन्य अधिकारी, रणनीतिक विशेषज्ञ, राजनयिक और रक्षा क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञ मौजूद रहे।

श्री संजय सेठ ने कहा कि भारत की युवा शक्ति देश के विकास और सुरक्षा की सबसे बड़ी ताकत है। सीमाओं पर सशस्त्र बलों के जवान देश की सुरक्षा के लिए कठिन परिस्थितियों में डटे हुए हैं। उनके पराक्रम और देश के युवाओं की ऊर्जा ने भारत को दुनिया में नई पहचान दिलाई है। उन्होंने कहा कि भारत अब केवल अपने लिए निर्माण

एनसीईआरटी को और नवोन्मेषी, समावेशी, भविष्य के अनुरूप विकसित करना जरूरी—केंद्रीय शिक्षा मंत्री

नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री प्रहलाद जोशी ने कहा कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की भारतीय शिक्षा व्यवस्था में छह दशकों से अधिक समय से महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्कूली शिक्षा में बदलाव लाने और बच्चों के भविष्य को आकार देने में एनसीईआरटी की अहम जिम्मेदारी है। इसको देखते हुए एनसीईआरटी को भविष्य में अधिक नवोन्मेषी, समावेशी, शोध आधारित और भविष्य के लिए तैयार संस्थान के रूप में विकसित करना होगा।

श्री जोशी ने मंगलवार को एनसीईआरटी मुख्यालय में एनसीईआरटी के 66वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि एनसीईआरटी ने अपनी पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण सामग्री और पाठ्यक्रम ढांचे के माध्यम से देश की स्कूली शिक्षा को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने स्कूली शिक्षा में व्यापक सुधारों के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया है। इसमें बच्चों के समग्र विकास, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, अनुभव आधारित शिक्षा और दक्षता आधारित सीखने पर जोर दिया गया है।

श्री जोशी ने एनसीईआरटी की ओर से तैयार किए गए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा बुनियादी चरण और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा स्कूली शिक्षा 2023 का उल्लेख करते हुए कहा कि कक्षा 1 से 9 तक के लिए नई पाठ्यपुस्तकों के विकास का काम भी महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एनसीईआरटी के प्रयासों की सराहना की।

उन्होंने बताया कि कक्षा 1 से 8 तक की पाठ्यपुस्तकें संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सभी 22 भाषाओं में तैयार की जा रही हैं। इसके अलावा विभिन्न भारतीय भाषाओं में 121 प्राइमर तैयार किए जा रहे हैं, जिनमें 93

इंटर—स्कूल नॉकआउट हॉकी टूर्नामेंट संपन्न

श्री विजय पुरम, 01 सितम्बर।

दक्षिण अण्डमान के उप शिक्षा कार्यालय द्वारा आयोजित लड़कों एवं लड़कियों के लिए इंटर—स्कूल नॉकआउट हॉकी टूर्नामेंट 29 अगस्त को संपन्न हुआ। टूर्नामेंट में दक्षिण अण्डमान के विद्यार्थियों के बीच उत्साहपूर्ण एवं रोमांचक मुकाबले देखने को मिले।

रांची टेकरी स्थित विवेकानंद केंद्र नगरपालिका विद्यालय मैदान में खेले गए फाइनल मुकाबले में लड़कों की श्रेणी में एसएसएस निर्मला ने जीएमएस डिगनाबाद को 3—0 गोल

फैटी लिवर में अंडा खाना चाहिए या नहीं? जानिए इस आम सवाल पर रिसर्च क्या कहता है

नई दिल्ली, 01 सितम्बर।

फैटी लिवर का नाम सुनते ही कई लोगों के मन में सबसे पहला सवाल आता है कि ऐसे में क्या खाने और किन चीजों के सेवन से बचना चाहिए। अंडे को लेकर लंबे समय से यह धारणा रही है कि इसमें मौजूद कोलेस्ट्रॉल लिवर में फैट बढ़ा सकता है, लेकिन हालिया शोध इस सवाल को थोड़ा अलग तरीके से देखता है।

अगर आप फैटी लिवर से जूझ रहे हैं और अंडा खाना पसंद करते हैं, तो इसे बिना वजह अपनी डाइट से हटाने से पहले कुछ जरूरी बातें जान लेनी चाहिए।

मौजूदा शोध के अनुसार, अंडा खाने से फैटी लिवर नहीं बढ़ता है। एक अध्ययन में 1,414 लोगों के करीब 6 साल के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। शोधकर्ताओं को अंडे के सेवन और नॉन—अल्कोहलिक फैटी लिवर डिजीज (NAFLD) से लिवर में फैट बढ़ने के बीच कोई सीधा संबंध नहीं मिला।

अंडे की बात आते ही दिमाग में कोलेस्ट्रॉल की बात आती है, जब कि अंडे में कोलीन नामक पोषक तत्व भी पाया जाता है, जो शरीर को कई तरह से फायदा पहुंचाता है। 2024 में हुए एक अध्ययन में ज्यादा कोलीन का सेवन NAFLD के जोखिम को कम करता है, लेकिन इसका एक मात्रा स्त्रोत अंडा मान लेना सही नहीं है।

इसलिए यह कहना सही नहीं होगा कि अंडा फैटी लिवर को ठीक करता है, बल्कि अंडा संतुलित आहार में शामिल किया जाने वाला पोषक भोजन है।

इस सवाल का जवाब उम्र, वजन, शारीरिक गतिविधि, मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल और पूरी डाइट जैसे पर निर्भर करता



करने वाला देश नहीं है, बल्कि दुनिया के लिए निर्माण करने की क्षमता विकसित कर रहा है। उन्होंने ‘मेक इन इंडिया’ से ‘मेक फॉर द वर्ल्ड’ तक की यात्रा का उल्लेख करते हुए कहा कि पिछले एक दशक में विनिर्माण, इलेक्ट्रॉनिक्स, मोबाइल, रक्षा उत्पादन, अंतरिक्ष और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देश ने उल्लेखनीय प्रगति की है।

श्री संजय सेठ ने कहा कि उपग्रह आधारित तकनीक से फसल, पानी की उपलब्धता और कीटों से जुड़ी जानकारी किसानों तक पहुंचाई जा रही है। उन्होंने किसान सम्मान निधि, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण और खाद्य सुरक्षा से जुड़ी योजनाओं का भी उल्लेख किया। उन्होंने अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी कंपनियों की भागीदारी, चंद्रयान—3 की सफलता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में भारत की बढ़ती भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि युवाओं को नई तकनीक विकसित करने और देश की समस्याओं का स्थानीय स्तर पर समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

66वां स्थापना दिवस



जनजातीय भाषाएं शामिल हैं। नई पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई को अधिक रोचक और प्रासंगिक बनाने के साथ—साथ भारत की विरासत और भारतीय ज्ञान परंपरा को भी शामिल किया जा रहा है।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि बदलते दौर में एनसीईआरटी को अपने शोध तंत्र को और मजबूत करने के साथ—साथ तकनीक के इस्तेमाल को भी बढ़ाना होगा। शिक्षा और समाज में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की बढ़ती भूमिका को देखते हुए विद्यार्थियों को डिजिटल साक्षरता, एआई की समझ, आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान और नवाचार जैसे कौशल से लैस करना जरूरी है। उन्होंने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण पर भी ध्यान देने की जरूरत बताई। इसके लिए पाठ्यक्रम में उचित हस्तक्षेप, मनोसामाजिक सहयोग और शिक्षकों के प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण बताया गया।

श्री जोशी ने कहा कि एनसीईआरटी को भविष्य में अधिक नवोन्मेषी, समावेशी, शोध आधारित और भविष्य के लिए तैयार संस्थान के रूप में विकसित करना होगा। उन्होंने कहा कि एनसीईआरटी को अपने छह दशकों से अधिक के अनुभव का लाभ उठाते हुए शिक्षा की बदलती जरूरतों के अनुरूप आगे बढ़ना चाहिए।

66वां स्थापना दिवस

से हराया, जबकि लड़कियों की श्रेणी में जीएसएसएस स्कूल लाइन ने जीडीएमएस (एस) को 2—0 गोल से पराजित किया।

यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि दक्षिण अण्डमान के उप शिक्षा अधिकारी श्री ज्ञान शील दुबे ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सहायक पर्यवेक्षक (खेल) श्री बी. सी. गेन ने लड़कों एवं लड़कियों, दोनों श्रेणियों में विजेता एवं उपविजेता टीमों को प्रमाण—पत्र एवं पदक प्रदान कर सम्मानित किया।

फैटी लिवर में अंडा खाना चाहिए या नहीं? जानिए इस आम सवाल पर रिसर्च क्या कहता है



है। अंडा कैसे खा रहे हैं, यह भी जरूरी है। फैटी लिवर में सिर्फ अंडे पर ध्यान देने के बजाय पूरी डाइट देखना ज्यादा जरूरी है। उबला अंडा, पोच्छ अंडा या कम तेल में बना ऑमलेट आम तौर पर ज्यादा बेहतर होता है। इसके मुकाबले बहुत ज्यादा तेल, मक्खन, चीज या प्रोसेस्ड मीट के साथ बनाया गया अंडा आपकी कुल कैलोरी और सैचुरेटेड फैट का सेवन बढ़ा सकता है यानी अंडा खाना या नहीं खाना के साथ—साथ अंडे को किस तरह और कैसे पूरी डाइट में शामिल किया जा रहा है, यह भी जरूरी है।

फैटी लिवर किसी एक खाद्य पदार्थ को हटाने या किसी एक चीज को अपनी डाइट में शामिल करने से बढ़ता या घटता नहीं है। वजन, शारीरिक गतिविधि, कुल कैलोरी, चीनी और कार्बोहाइड्रेट का सेवन तथा लाइफस्टाइल पर निर्भर करता है। इसलिए अगर आपकी डाइट में अंडा शामिल है, तो उसे संतुलित भोजन का हिस्सा बनाएं। सब्जियां, दाल, साबुत अनाज और पर्याप्त प्रोटीन के साथ संतुलित आहार पर ध्यान देना ज्यादा कारगर है।